पौष मास की विशेष पूजा- कूर्मद्वादशी

भगवान् विष्णु के दशावतारों में दूसरा कूर्म का है। इसी अवतार में समुद्र-मन्थन हुआ था, जिसमें भगवान् ने कूर्म के रूप में मन्दराचल को आधार प्रदान किया था। पौष मास में इसी कूर्म के रूप में भगवान् विष्णु की पूजा द्वादशी तिथि को की जाती है। आज यह कूर्म-द्वादशी अप्रचलित हो चुकी है, किन्तु इसका उल्लेख हमें 12वीं शती के ग्रन्थ 'कृत्यकल्पतरु' में मिलता है। पाटकों की जानकारी तथा आस्था होने पर इस व्रत को करने के लिए इसका पूरा विवरण यहाँ दिया जा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि पौष मास भघवान् की उपासना के लिए महत्त्वपूर्ण है।

सनातन धर्म में पौषमास अन्य मासों की तरह ही उपासना और अर्चना के लिए प्रतिष्ठित है। इस मास कृष्णपक्ष की एकादशी तिथि को तिलदाही पूजन एवं व्रत का विधान 13वीं शती के ग्रन्थ में मिलता है, जिसका विवेचन हम पूर्व आलेख में कर चुके हैं। यहाँ शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि को कूर्मद्वादशी की पूजा का उल्लेख किया रहा है। इस पूजन का उल्लेख 12वीं शती में लक्ष्मीधर ने अपने ग्रन्थ 'कृत्यकल्पतरु' में किया है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि हेमाद्रि गुजरात के थे और उनके 'चतुर्वर्गचिन्तामणि' में उल्लिखित व्रत पश्चिम भारत में प्रसिद्ध रहे हैं। किन्तु लक्ष्मीधर कन्नौज के गहड़वाल राजा विजयचन्द्र के दरबार में थे और उन्होंने जिन व्रतों का उल्लेख किया है वे वर्तमान उत्तरप्रदेश, सम्पूर्ण बिहार, नेपाल सहित पूर्वोत्तर भारत में प्रसिद्ध रहे हैं। लक्ष्मीधर का 'कृत्यकल्पतरु' सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत के लिए आधार ग्रन्थ माना

द हिन्दू पैंथन, एडबर्ड मूर, (चित्र सहित नवीन संस्करण) डब्ल्यू.पी. सिम्पसन, 1864 ई. में प्रकाशित।

जाता है। इससे हम मान सकते हैं यह कूर्म द्वादशी व्रत इन क्षेत्रों में प्रचलन में था। पौष मास की यह कूर्मद्वादशी पूजा शुक्लपक्ष की द्वादसी तिथि को की जाती है। इस तिथि के भी देवता भगवान् विष्णु हैं।

वर्तमान उपलब्ध वराह पुराण में यह अंश मिलता है। यहाँ पाठकों की सुविधा के लिए हिन्दी अनुवाद के साथ इस व्रत का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

[अथ कूर्मद्वादशीव्रतम्]

दुर्वासा उवाच
पौषमासस्य या पुण्या द्वादशी शुक्लपक्षतः।
तस्यां प्रागिव सङ्कल्प्य कुर्यात् स्नानादिकाः क्रियाः॥

पौष मास के शुक्लपक्ष की जो द्वादशी तिथि होती है उसमें अन्य द्वादशी तिथि की तरह संकल्प कर स्नान आदि करें।

निर्वर्त्य बोधयेद्रात्रावेकादश्यां जनार्दनम्।
पृथङ्मन्त्रैर्द्विजश्रेष्ठ देवदेवं जनार्दनम्॥

एक दिन पूर्व एकादशी को व्रत रखकर रात्रि में अलग -अलग मन्त्रों से भगवान् विष्णु को सम्बधित करना चाहिए।

कूर्माय पादौ प्रथमं तु पूज्यं
नारायणायेति कटिं हरेस्तु।
सकर्षणायेत्युदरं हरेस्तु
उरो विशोकाय भवाय कण्ठम्॥

सबसे पहले 'कूर्माय नमः' इस मन्त्र से दोनों पैरों की पूजा करें। 'नारायणाय नमः' इस मन्त्र से कमर की पूजा करें। 'सङ्कर्षणाय नमः' इस मन्त्र से भगवान् के पेट की पूजा करें। 'विशोकाय नमः' इस मन्त्र से छाती की पूजा करें और 'भवाय नमः' मन्त्र से कण्ठ की पूजा करें।

सुबाहवे चैव भुजौ शिरश्च
नमो विशालाय रथाङ्गशङ्खौ।
स्वनाममन्त्रेण सुधूपगन्धैः
नानानिवेद्यैर्विविधैः फलैश्च॥

'सुबाहवे नमः' इससे दोनों बाहों तथा मस्तक की पूजा तथा 'विशालाय नमः' इस मन्त्र से चक्र एवं शंख की पूजा करें। अपने नाम मन्त्रों से सुन्दर धूप, चन्दन, अनेक प्रकार के नैवेद्य तथा फल अर्पित करें।

अभ्यर्च्य देवं कलशं तदग्रे
संस्थाप्य माल्यासुरदामकण्ठम्।
तं रत्नगर्भं तु पुरेव कृत्वा
स्वशक्तितो हेममयं तु देवम्॥

भगवान् विष्णु की इस प्रकार पूजा कर उनके समक्ष कलश की स्थापना कर उसके कण्ठ में माला पहनानी चाहिए। पूर्वोक्त विधि से उस कलश के भीतर रत्न रखना चाहिए और यदि सामर्थ्य हो तो देवता की मूर्ति सोने बनवानी चाहिए। (विशेष- यहाँ माल्यासुरदामकण्ठम् का अर्थ स्पष्ट नहीं है। यही अंश हेमाद्रि के 'चतुर्वर्गचिन्तामणि' में भी है, जिसमें "माल्यास्तृतदामकण्ठम्" पाठ है तथा वराहपुराण में जो यह अंश उपलब्ध है, उसमें "मालासितवस्त्रयुक्तम्" पाठ है। वराहपुराण के अनुसार माला तथा श्वेत वस्त्र का विधान किया गया है।)

समन्दरं कूर्मरूपेण कृत्वा
संस्थापयेत्ताम्रपात्रे घृतस्य।
पूर्णे घटोपर्यथ संनिवेश्य
श्वो ब्राह्मणायैवमेवं तु दद्यात्॥

इस घट को मन्दराचल सहित कूर्म के रूप में स्थापित कर इसके ऊपर घी से भरा हुआ ताम्बे का कटोरा रखें और उसे अगले दिन ब्राह्मण को दान कर दें।

यो ब्राह्मणान् भोज्य सदक्षिणांश्च
यथाशक्त्या प्रीणयेद्देवदेवम्।
नारायणं कूर्मरूपेण पश्चात्
स्वयं च भुञ्जीत सभृत्यवर्गः॥
एवं कृते चेत्त्रिविधं हि पापं
विनश्यते नात्र विचारणास्ति।
संसारचक्रं प्रविहाय शुद्धं
प्राप्नोति लोकं तु हरेः पुराणम्॥

जो दक्षिणा के साथ ब्राह्मणों को भोजन कराकर शक्ति के अनुसार कूर्मरूप नारायण को प्रसन्न करते हैं बाद में स्वयं भी नौकरों के साथ भोजन करते हैं। उनके तीनों प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं, यहाँ चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वे इस संसार के चक्र को छोड़कर श्रीहरि के प्राचीन लोक को पाते हैं।

अनेकजन्मान्तरसञ्चितानि
नश्यन्ति पापानि नरस्य भक्त्या।
प्रागुक्तरूपं तु फलं लभन्ते
नारायणस्तुष्टिमुपैति सद्यः॥

मनुष्य के अनेक जन्मों से चले आ रहे पाप पूर्वोक्त फल पाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं और तुरत नारायण प्रसन्न हो जाते हैं।

इति कूर्मद्वादशीव्रतम्॥

यह कूर्मद्वादशी का विधान है।

(-सम्पादक, पं. भवनाथ झा द्वारा संकलित एवं अनूदित)

***

अग्रिम अंक से

सन्त लालच दास कृत
'हरिचरित्र' महाकाव्य के अप्रकाशित अंश का क्रमशः प्रकाशन

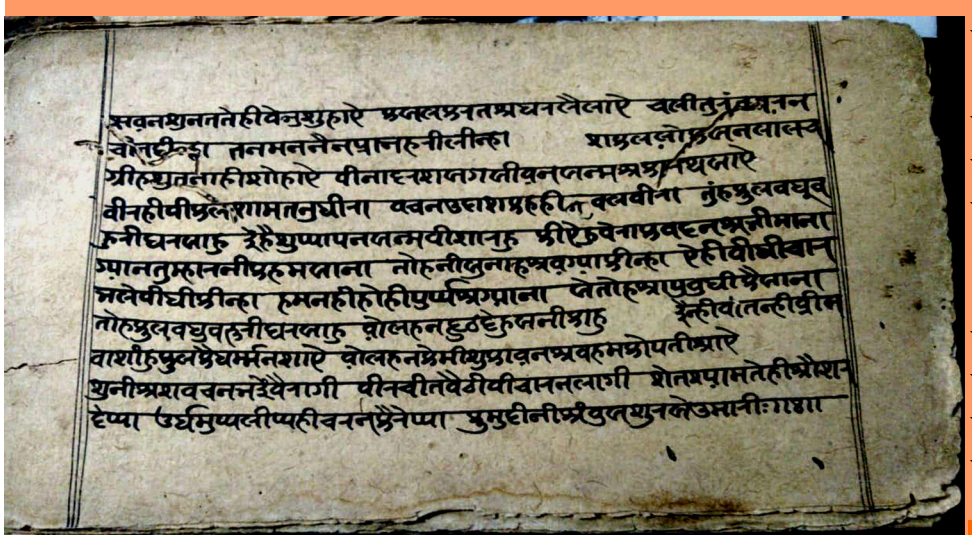

सन्त लालच दास 17वीं शती में बरेली के सन्त कवि थे। उन्होंने भागवत के दशम स्कन्ध के आधार पर अवधी में 'हरिचरित्र' नामक रचना 96 अध्यायों में की। फिर भी वह रचना अधूरी रह गयी तो उनके शिष्य ने

शेष पृष्ठ 50 पर देखें